हरिशंकर परसाई

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» हरिशंकर परसाई: परिचय और साहित्यिक योगदान

प्रश्न 1 (आसान). हरिशंकर परसाई जी का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – उनका जन्म मध्य प्रदेश के जमानी गाँव में हुआ था।

प्रश्न 2 (आसान). उन्होंने किस विधा को साहित्यिक प्रतिष्ठा प्रदान की?
उत्तर – उन्होंने व्यंग्य विधा को साहित्यिक प्रतिष्ठा प्रदान की।

प्रश्न 3 (मध्यम). हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य की दो मुख्य विशेषताएँ बताइए।
उत्तर – उनके व्यंग्य समाज की विसंगतियों पर करारी चोट करते थे और वे पाठक को गुदगुदाते हुए झकझोर देने में सक्षम थे।

प्रश्न 4 (कठिन). परसाई जी की लेखन शैली ने व्यंग्य को कैसे एक गंभीर साहित्यिक रूप दिया, विस्तार से समझाइए।
उत्तर – परसाई जी ने व्यंग्य को केवल हँसी-मज़ाक तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक चेतना जगाने का एक सशक्त माध्यम बनाया। उनकी भाषा में बोलचाल के शब्दों का प्रयोग, तीखापन और गहरी अंतर्दृष्टि थी, जिससे उनके व्यंग्य केवल गुदगुदाते नहीं थे, बल्कि समाज की कुरीतियों, पाखंड और भ्रष्टाचार पर सोचने को मजबूर करते थे। उन्होंने व्यंग्य को 'चिंतन और कर्म की प्रेरणा' देने वाली विधा के रूप में स्थापित किया, जिससे इसे साहित्यिक जगत में गंभीरता और सम्मान मिला।

» 'टार्च बेचनेवाले' का केंद्रीय विषय

प्रश्न 5 (आसान). 'टार्च बेचनेवाले' कहानी में किस पर व्यंग्य किया गया है?
उत्तर – आस्थाओं के बाज़ारीकरण और धार्मिक पाखंड पर।

प्रश्न 6 (आसान). कहानी में 'आत्मा के भीतर टार्च जल उठने' का क्या अर्थ है?
उत्तर – आध्यात्मिक ज्ञान या enlightenment का दावा करना, जिसका उपयोग फिर लोगों को प्रभावित करने के लिए किया जाता है।

प्रश्न 7 (मध्यम). कहानी के दोनों दोस्तों के 'टार्च' बेचने के तरीके में क्या समानता और अंतर है?
उत्तर – समानता यह है कि दोनों लोगों को 'अंधेरे का डर' दिखाकर 'प्रकाश' बेचते हैं। अंतर यह है कि एक भौतिक टार्च बेचता है, जबकि दूसरा आध्यात्मिक ज्ञान का दिखावा करके लोगों की आस्था को बेचता है।

प्रश्न 8 (कठिन). हरिशंकर परसाई ने 'टार्च बेचनेवाले' के माध्यम से समाज को क्या संदेश दिया है?
उत्तर – परसाई जी ने समाज को यह संदेश दिया है कि हमें धार्मिक पाखंड और आस्थाओं के बाज़ारीकरण से सावधान रहना चाहिए। उन्होंने दिखाया कि कैसे लोग धर्म या आध्यात्मिकता का चोला ओढ़कर भोली-भाली जनता को मूर्ख बनाते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। असली ज्ञान या आस्था व्यापार का विषय नहीं हो सकती।

» पहले दोस्त का टार्च बेचने का धंधा

प्रश्न 9 (आसान). पहले दोस्त की टॉर्च का क्या नाम था?
उत्तर – सूरज छाप टॉर्च

प्रश्न 10 (आसान). टॉर्च बेचने वाला लोगों को कैसे डराता था?
उत्तर – अँधेरे में रास्ता न दिखने, काँटे लगने, साँप और शेर-चीते होने की बातें कहकर।

प्रश्न 11 (मध्यम). टार्च बेचने वाला दोस्त क्यों सफल था?
उत्तर – वह लोगों के स्वाभाविक डर का फायदा उठाता था और अपनी चीज़ को एक समाधान के रूप में प्रस्तुत करता था।

प्रश्न 12 (कठिन). टार्च बेचने वाले के व्यापार में 'अँधेरा' और 'प्रकाश' किस बात के प्रतीक हैं?
उत्तर – यहाँ 'अँधेरा' लोगों के मन का डर, अज्ञानता, और समस्याओं का प्रतीक है, और 'प्रकाश' उस डर या समस्या से निकलने के लिए बेचा जाने वाला समाधान (टॉर्च) का प्रतीक है। ये बाज़ारवाद और पाखंड की ओर इशारा करते हैं।

» पैसा कमाने की हताशा और दोस्तों का अलग होना

प्रश्न 13 (आसान). दोनों दोस्तों के सामने कौन-सा 'आसमान को छूता हुआ सवाल' खड़ा था?
उत्तर – 'पैसा कैसे पैदा करें?'

प्रश्न 14 (आसान). दोनों दोस्त अलग होने के बाद कितने साल बाद मिलने पर सहमत हुए थे?
उत्तर – पाँच साल बाद।

प्रश्न 15 (मध्यम). लेखक के अनुसार, दोस्त अलग-अलग दिशाओं में क्यों जाते हैं, साथ क्यों नहीं?
उत्तर – लेखक ने कहा कि 'किस्मत आज़मानेवालों की जितनी पुरानी कथाएँ मैंने पढ़ी हैं, सबमें वे अलग-अलग दिशा में जाते हैं।' उन्हें डर था कि 'साथ जाने में किस्मतों के टकराकर टूटने का डर रहता है।'

प्रश्न 16 (कठिन). कहानी में 'सवाल के पाँव ज़मीन में गहरे गड़े हैं। यह उखड़ेगा नहीं। इसे टाल जाएँ' – इस बात से दोस्त की किस सोच का पता चलता है?
उत्तर – यह बात दोस्त की निराशावादी और समस्याओं से बचने की प्रवृत्ति को दर्शाती है। वह तुरंत हार मान लेता है और समस्या का सामना करने की बजाय उसे टालना चाहता है, यह दर्शाता है कि वह तात्कालिक कठिनाइयों से घबरा जाता है।

» दूसरे दोस्त का साधु वेश और प्रवचन

प्रश्न 17 (आसान). दूसरा दोस्त लेखक को किस वेश में मिला?
उत्तर – भव्य साधु वेश में, रेशमी वस्त्रों और लंबी दाढ़ी के साथ।

प्रश्न 18 (आसान). प्रवचन का आरंभ किस वाक्य से हुआ?
उत्तर – 'मैं आज मनुष्य को एक घने अंधकार में देख रहा हूँ'।

प्रश्न 19 (मध्यम). प्रवचन में 'अंधकार' और 'प्रकाश' का क्या अर्थ है?
उत्तर – अंधकार से आशय मनुष्य की आत्मा का अज्ञान, भय, और पीड़ा है, जबकि प्रकाश से आशय आंतरिक ज्ञान और आत्म-जागरण है।

प्रश्न 20 (कठिन). लेखक ने दूसरे दोस्त के प्रवचन में छिपे व्यंग्य को कैसे उजागर किया है? क्या यह सचमुच आध्यात्मिक था?
उत्तर – लेखक को यह प्रवचन एक ढोंग लगता है क्योंकि दोस्त लोगों को अंधकार का डर दिखाकर अपने 'साधना मंदिर' में बुला रहा था, जो कि टार्च बेचने वाले के सामान था – पहले डर दिखाओ, फिर समाधान बेचो। यह आध्यात्मिक कम, व्यापारिक ज़्यादा था।

» दोनों दोस्तों के धंधे में समानता और अंतर

प्रश्न 21 (आसान). लेखक के अनुसार, दोनों दोस्तों का मुख्य धंधा क्या था?
उत्तर – टार्च बेचना

प्रश्न 22 (आसान). दूसरे दोस्त ने कौन सी 'कंपनी' बदली?
उत्तर – टार्च बेचने का तरीका और उसका नाम (भौतिक से आध्यात्मिक)

प्रश्न 23 (मध्यम). आपकी समझ में 'अंधेरे का डर' दिखाने का क्या मतलब है?
उत्तर – लोगों को किसी अनिश्चितता, समस्या या भय से डराकर उन्हें अपने समाधान को अपनाने के लिए मजबूर करना।

प्रश्न 24 (कठिन). क्या समाज में ऐसे लोग हैं जो आज भी 'भीतर के अंधेरे' का डर दिखाकर अपना फायदा करते हैं? उदाहरण सहित समझाएं।
उत्तर – हाँ, बिलकुल। कई धर्मगुरु या तथाकथित 'स्पिरिचुअल गुरु' लोगों की मानसिक अशांति, अकेलेपन या जीवन की समस्याओं का फायदा उठाते हैं। वे उन्हें 'मन के अंधकार' से डराते हैं और फिर अपने महंगे कोर्स, आशीर्वाद, या 'साधना शिविर' बेचते हैं, जिससे वे आर्थिक लाभ कमाते हैं।

» नई 'कंपनी' और सनातन व्यापार

प्रश्न 25 (आसान). कहानी में 'सनातन कंपनी' से लेखक का क्या आशय है?
उत्तर – लेखक का आशय धार्मिक पाखंड और अंधविश्वासों के धंधे से है जो हमेशा से चला आ रहा है।

प्रश्न 26 (आसान). पहला दोस्त 'सूरज छाप' टार्च की पेटी नदी में क्यों फेंक देता है?
उत्तर – क्योंकि उसे दूसरे दोस्त का 'सनातन व्यापार' (धार्मिक पाखंड का धंधा) अधिक फायदेमंद और शाश्वत लगता है।

प्रश्न 27 (मध्यम). लेखक ने क्यों कहा कि 'कंपनी नई नहीं है, सनातन है'? इस कथन का गूढ़ अर्थ समझाइए।
उत्तर – यह कथन दर्शाता है कि धर्म के नाम पर पाखंड और लोगों को डराकर कमाई करने का धंधा नया नहीं है, बल्कि यह सदियों से समाज में व्याप्त है। लोग अपने तरीकों में बदलाव ला सकते हैं, पर इस तरह के शोषण का मूल व्यापार कभी खत्म नहीं होता, इसीलिए इसे 'सनातन' कहा गया है।

प्रश्न 28 (कठिन). इस कहानी के संदर्भ में 'धंधा वही करूँगा, यानी टार्च बेचूँगा। बस कंपनी बदल रहा हूँ' – इस पंक्ति का विश्लेषण कीजिए कि यह समाज की किस कड़वी सच्चाई को उजागर करती है।
उत्तर – यह पंक्ति समाज की उस कड़वी सच्चाई को उजागर करती है कि लोग अपने स्वार्थ के लिए, विशेषकर पैसा कमाने के लिए, सिद्धांतों और तरीकों को आसानी से बदल देते हैं। चाहे वह भौतिकवादी 'सूरज छाप' टार्च बेचना हो या आध्यात्मिक 'आत्मा के भीतर के प्रकाश' की बात करना हो, दोनों का उद्देश्य लोगों के मन में डर पैदा कर उसका 'समाधान' बेचना है। यह दर्शाता है कि अवसरवादी लोग अपने फायदे के लिए किसी भी 'कंपनी' (विचारधारा या तरीके) से जुड़ सकते हैं, पर उनका शोषण करने का मूल 'धंधा' वही रहता है। यह धार्मिक पाखंड और अवसरवादिता पर गहरा व्यंग्य है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. हरिशंकर परसाई जी के साहित्यिक योगदान को समझाइए और उनकी किन्हीं दो प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

› पहले हम बताएंगे कि हरिशंकर परसाई जी कौन थे, यानी उनका परिचय देंगे।
› फिर समझाएंगे कि व्यंग्य क्या होता है और उन्होंने कैसे इस विधा को 'साहित्यिक प्रतिष्ठा' दिलाई।
› बताएंगे कि उनके व्यंग्य 'समाज में आई विसंगतियों, विडंबनाओं पर करारी चोट' करते हुए 'चिंतन और कर्म की प्रेरणा' देते थे।
› उनकी भाषा-शैली के बारे में बताएंगे कि वो 'बोलचाल के शब्दों' का प्रयोग कितनी कुशलता से करते थे।
› अंत में उनकी किन्हीं दो महत्वपूर्ण रचनाओं का नाम लिखेंगे, जैसे 'हँसते हैं रोते हैं' (कहानी संग्रह) और 'विकलांग श्रद्धा का दौर' (व्यंग्य संग्रह)।

उत्तर – हरिशंकर परसाई जी हिंदी के एक प्रमुख व्यंग्यकार थे, जिन्होंने व्यंग्य विधा को साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। वे समाज की बुराइयों और विडंबनाओं पर अपनी लेखनी से तीखा प्रहार करते थे, लेकिन उनकी शैली इतनी मनोरंजक थी कि पाठक हँसते-हँसते सोचने पर मजबूर हो जाता था। उनकी भाषा बोलचाल की और प्रभावी थी। उनकी दो प्रमुख रचनाएँ हैं: 'हँसते हैं रोते हैं' (कहानी संग्रह) और 'विकलांग श्रद्धा का दौर' (व्यंग्य संग्रह)।

उदाहरण 2. हरिशंकर परसाई की कहानी 'टार्च बेचनेवाले' के केंद्रीय विषय को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

› सबसे पहले, कहानी के मुख्य पात्रों को समझें - एक भौतिक टार्च बेचने वाला और एक आध्यात्मिक उपदेशक।

› फिर देखें कि दोनों कैसे 'अंधेरे का डर' दिखाकर लोगों को 'प्रकाश' बेचने का दावा करते हैं, चाहे वह भौतिक टार्च हो या आत्मिक ज्योति।

› इसके बाद, परसाई जी के व्यंग्य को पहचानें - कि कैसे आस्था और धर्म का इस्तेमाल व्यक्तिगत लाभ कमाने के लिए किया जा रहा है।

› अंत में, इस केंद्रीय विचार को स्पष्ट करें कि यह रचना आस्थाओं के बाज़ारीकरण और धार्मिक पाखंड पर सीधा हमला है।

उत्तर – कहानी 'टार्च बेचनेवाले' का केंद्रीय विषय यह है कि समाज में लोग किस तरह आस्थाओं और धर्म का बाज़ारीकरण कर रहे हैं। इसमें दिखाया गया है कि कैसे एक व्यक्ति भौतिक टार्च बेचता है और उसका दोस्त आध्यात्मिक ज्ञान या 'आत्मा के भीतर के प्रकाश' को बेचता है। दोनों ही लोगों के डर और अंधविश्वास का फायदा उठाकर पैसा कमाते हैं। यह कहानी धार्मिक पाखंड (religious hypocrisy) और उस तरीके पर व्यंग्य करती है, जिससे लोग धर्म को एक व्यवसाय बना लेते हैं।

उदाहरण 3. टार्च बेचनेवाला दोस्त लोगों को कैसे प्रभावित करता था ताकि उसकी टार्च बिके?

› पहला दोस्त चौराहे पर लोगों को इकट्ठा करता था।

› वह नाटकीय ढंग से रात के भयानक अँधेरे का वर्णन करता था, जहाँ रास्ता नहीं दिखता, साँप-चीते घूम रहे हैं, और घर में भी साँप काट सकता है।

› इससे लोग दिनदहाड़े भी अँधेरे के डर से काँपने लगते थे।

› जब लोग डर जाते, तब वह अपनी 'सूरज छाप' टार्च को 'अंधेरे को दूर भगाने वाला प्रकाश' बताकर बेचता था।

› डर और समाधान दोनों एक साथ दिखाकर वह लोगों को अपनी टॉर्च खरीदने पर मजबूर करता था।

उत्तर – टार्च बेचने वाला दोस्त लोगों के मन में अँधेरे का गहरा डर पैदा करता था और फिर अपनी 'सूरज छाप' टार्च को उस डर का एकमात्र समाधान बताकर बेचता था।

उदाहरण 4. कहानी के दोनों दोस्तों के अलग होने का मुख्य कारण क्या था?

› पहला कदम: कहानी में दोनों दोस्तों के सामने आए सबसे बड़े 'सवाल' को पहचानो।

› दूसरा कदम: उस सवाल को हल करने के लिए उन्होंने क्या फैसला लिया, इस पर ध्यान दो।

› तीसरा कदम: उन्होंने एक साथ जाने की बजाय अलग-अलग जाने का क्या कारण बताया, इसे समझो।

› निष्कर्ष: इन तीनों बातों को मिलाकर मुख्य कारण तक पहुंचो।

उत्तर – दोनों दोस्तों के अलग होने का मुख्य कारण 'पैसा कैसे पैदा करें' – यह सवाल था, जिसने उनमें 'पैसा कमाने की हताशा' भर दी थी। उन्हें लगा कि अलग-अलग दिशाओं में जाकर किस्मत आज़माना ही बेहतर होगा, ताकि 'किस्मतों के टकराकर टूटने का डर' न रहे।

उदाहरण 5. लेखक ने दूसरे दोस्त के साधु वेश और प्रवचन का वर्णन किस प्रकार किया है? उसके प्रवचन का मुख्य भाव क्या था?

› सबसे पहले, लेखक दूसरे दोस्त को 'मंच पर सुंदर रेशमी वस्त्रों से सजे एक भव्य पुरुष' के रूप में देखते हैं।

› उसकी शारीरिक बनावट को 'खूब पुष्ट', 'सँवारी हुई लंबी दाढ़ी' और 'पीठ पर लहराते लंबे वेफश' बताकर उसे एक फ़िल्मी संत जैसा दर्शाया गया है।

› उसका प्रवचन 'गुरु-गंभीर वाणी' में था और वह 'मैं आज मनुष्य को एक घने अंधकार में देख रहा हूँ' कहकर शुरुआत करता है।

› वह आत्मा में अंधकार, पथभ्रष्ट होने और भय व पीड़ा से ग्रस्त होने की बात करता है, 'अंतर की आँखें ज्योतिहीन हो गई हैं' जैसे वाक्यांशों का प्रयोग करता है।

› अंत में, वह लोगों को 'डरो मत' कहकर 'प्रकाश बाहर नहीं है, उसे अंतर में खोजो' और 'हमारे साधना मंदिर में आकर उस ज्योति को अपने भीतर जगाओ' का उपदेश देता है।

उत्तर – लेखक ने दूसरे दोस्त को एक भव्य, फ़िल्मी संत के रूप में चित्रित किया है, जिसके वस्त्र रेशमी और दाढ़ी-बाल सँवरे हुए हैं। उसके प्रवचन का मुख्य भाव मानव-आत्मा में व्याप्त अंधकार और भय का चित्रण करके, फिर 'अंतर के प्रकाश'

को जगाने के लिए अपने 'साधना मंदिर' में आने का आह्वान करना था।

उदाहरण 6. पाठ के आधार पर समझाएं कि भीतर के अंधेरे की टार्च बेचने और 'सूरज छाप' टार्च बेचने के धंधे में क्या समानता और अंतर है?

› पहला दोस्त 'सूरज छाप' टार्च बेचकर लोगों को बाहरी अंधकार से बचाने की बात करता था, जैसे 'रात में रास्ता दिखेगा' या 'जानवर नहीं काटेंगे'।

› दूसरा दोस्त साधु बनकर 'आत्मा के भीतर के अंधकार' से लोगों को डराता है। वो कहता है कि 'प्रकाश बाहर नहीं है, उसे अंतर में खोजो', 'अंतर में बुझी उस ज्योति को जगाओ'। यह आंतरिक अशांति, भय या पाप का डर है।

› दोनों में समानता यह है कि दोनों ही 'अंधेरे' का डर दिखाकर, चाहे वह बाहरी हो या आंतरिक, लोगों से 'अपनी कंपनी का टार्च' बेचकर लाभ कमा रहे हैं। लेखक का कहना है कि 'अगर वह लोगों को अँधेरे का डर दिखाता है, तो ज़रूर अपनी कंपनी का टार्च बेचना चाहता है'।

› अंतर यह है कि एक बाहरी, भौतिक अंधकार (रात का अंधेरा) दूर करने की बात करता है, जबकि दूसरा आंतरिक, मानसिक या आध्यात्मिक अंधकार (मन का भय, अशांति) को दूर करने का दावा करता है।

उत्तर – दोनों दोस्तों के धंधे में मूलभूत समानता यह है कि दोनों ही लोगों के भीतर या बाहर के 'अंधेरे' का डर दिखाकर अपना 'टार्च' बेचते हैं और लाभ कमाते हैं। अंतर यह है कि एक दोस्त बाहरी भौतिक अंधकार के लिए 'सूरज छाप' टार्च बेचता था, जबकि दूसरा दोस्त आंतरिक, आध्यात्मिक अंधकार को दूर करने के लिए 'गुरु-गंभीर प्रवचन' और 'साधना मंदिर' रूपी 'टार्च' बेचता है।

उदाहरण 7. हरिशंकर परसाई की कहानी 'टार्च बेचनेवाले' में 'नई कंपनी' और 'सनातन व्यापार' की अवधारणा से लेखक क्या व्यंग्य करना चाहते हैं?

› पहले समझेंगे कि 'नई कंपनी' क्या है - यह दूसरा दोस्त है जो 'आत्मा के प्रकाश' की बात करता है।

› फिर 'सनातन व्यापार' क्या है - इसका अर्थ है धार्मिक पाखंड का धंधा जो हमेशा से चला आ रहा है।

› अब देखेंगे कि पहला दोस्त 'सूरज छाप' को छोड़कर इस 'सनातन' व्यापार से क्यों जुड़ता है - क्योंकि उसने देखा कि इसमें ज़्यादा कमाई है और यह हमेशा चलता है।

› अंत में, लेखक का व्यंग्य स्पष्ट करेंगे - कि कैसे लोग डर और अंधविश्वास का फायदा उठाने के लिए तरीके बदल लेते हैं, पर यह धंधा कभी बंद नहीं होता, यह 'सनातन' है।

उत्तर – लेखक 'नई कंपनी' और 'सनातन व्यापार' के माध्यम से यह व्यंग्य करते हैं कि समाज में धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास का व्यापार शाश्वत (सनातन) है। लोग चाहे बाहरी डर का फायदा उठाएं या आंतरिक डर का, उनका मूल उद्देश्य पैसा कमाना ही होता है। पहला दोस्त 'सूरज छाप' का धंधा छोड़कर 'आत्मा के भीतर के प्रकाश' का धंधा अपनाता है, जो दर्शाता है कि व्यापार का स्वरूप बदल सकता है, पर लोगों के डर का शोषण करने का धंधा हमेशा चलता रहता है। यह मनुष्य की अवसरवादिता और धार्मिक पाखंड पर गहरा व्यंग्य है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• हरिशंकर परसाई जी का परिचय, व्यंग्य विधा में उनका योगदान और उनकी प्रमुख रचनाओं के नाम बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्हें अच्छे से याद कर लेना।

• यह प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछा जाता है कि 'टार्च बेचनेवाले' कहानी का मूल संदेश या केंद्रीय विषय क्या है। इसे विस्तार से समझने और अपने शब्दों में लिखने का अभ्यास ज़रूर करें।

• इस भाग से अक्सर प्रश्न आते हैं कि टार्च बेचने वाला लोगों के डर का लाभ कैसे उठाता था और 'अंधेरे' व 'प्रकाश' के प्रतीकात्मक अर्थ क्या हैं। इसे ध्यान से समझना।

• यह अंश कहानी का 'टर्निंग पॉइंट' है। इस बात को याद रखना कि दोनों दोस्त शुरुआत में एक ही समस्या से जूझ रहे थे – 'पैसा कैसे कमाएँ', और इसी वजह से वे अलग हुए। यह प्रश्न कई बार कहानी के केंद्रीय भाव को समझने के लिए पूछा जाता है।

• इस भाग से 'व्यंग्य' को पहचानना और 'अंधकार' व 'प्रकाश' के प्रतीकात्मक अर्थ को समझाना महत्वपूर्ण है। यह परसाई जी की लेखन शैली को दर्शाता है।

• यह प्रश्न 'दोनों दोस्तों के धंधे में समानता और अंतर' सीधा-सीधा आपकी परीक्षा में आ सकता है, क्योंकि यह पाठ का केंद्रीय विचार है। इसे अच्छे से समझकर जाना।

• यह अवधारणा हरिशंकर परसाई के सामाजिक व्यंग्य का केंद्र है। परीक्षा में इस पर आधारित प्रश्न ज़रूर आते हैं, इसलिए 'सनातन व्यापार' का अर्थ और लेखक का व्यंग्य अच्छे से समझ लेना।

एक नज़र में रिवीज़न

› परसाई: व्यंग्य विधा के प्रवर्तक, समाज की विसंगतियों पर तीखी चोट, बोलचाल की भाषा।

› टार्च बेचनेवाले: आस्थाओं का बाज़ारीकरण, धार्मिक पाखंड पर व्यंग्य।

› पहला दोस्त: अँधेरे का डर दिखाकर 'सूरज छाप' टार्च बेचता था।

› पैसा कमाने की हताशा में दोस्तों का अलग-अलग दिशाओं में किस्मत आज़माना।

› दूसरा दोस्त साधु वेश में 'आत्मा के अंधकार' का प्रवचन देता है।

› दोनों दोस्त भय बेचकर लाभ कमाते हैं: बाहरी vs आंतरिक अंधकार।

› धार्मिक पाखंड का 'सनातन व्यापार' – कंपनी बदली, धंधा वही (डर का शोषण)।